सुशील कुमार,

आधुनिकता और तकनीकी की ओर हिंदी के बढ़ते कदम

भाषा किसी भी समाज की संस्कृति का दर्पण होती है। वैदिक काल में संस्कृत का वर्चश्व रहा। आदि काल में मुख्य तौर पर उत्तर भारत में जो भाषा बोली अथवा लिखी जाती थी उसे हिंदी का प्राकृत या अपभ्रंश रूप कहा जा सकता है। बुद्ध कालीन साहित्य की रचना पालि भाषा में हुई । मध्य काल में भक्ति-काल के समय कवियों और संतो की मुख्य भाषा ब्रज और अवधि रही जिनमें सूरदासतथा तुलसीदास का नाम प्रमुख है। परंतु कबीर, रहीम, रैदास, गुरू नानक, अमीर खुसरो व नाथ-पंथी साधुओं के माध्यम से आमजन के द्वारा बोली जाने वाली खड़ी बोली (हिंदी भाषा) का भी आविर्भाव हो चुका था, जो उत्तर भारत में विकसित हुई । रीति काल के दरबारी साहित्य के समाप्त होते-होते कवियों की रसिक भाषा ब्रज और अवधि भाषा को पछाड़ कर ख़ड़ी बोली का चलन बढ़ा। भले ही ब्रज या अवधि भाषा की तुलना में खड़ी बोली में लय व गेयता की कमी थी। परंतु ख़ड़ी बोली के काव्य में व्यवहारिकता एवं तार्किकता का प्रभाव था। कबीर, रहीम और अमीर खुसरो के काव्य में खरापन झलकता है। मैथिली में रचित **विद्यापति की पदावली** भी हिंदी भाषा के विकास की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। भारतेंदु युग, द्विवेदी युग तथा छायावादी युग के कवियों और काव्य में हिंदी का अभूतपूर्व विकास हुआ और आधुनिक हिंदी साहित्य की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति हुई।

हिंदी भाषा व साहित्य पर मुगलकाल और ब्रिटिश राज के कई दुष्परिणाम पड़े परंतु इसके अस्तित्व पर आंच नहीं आई। आजादी की लडाई व विदेशियों से मुक्त कराने के लिए कवि व साहित्यकारों ने हिंदी में देशभक्ति व देशप्रेम के लिए अनूठे साहित्य की रचना की जो स्वतंत्रता संग्राम में हथियार बनकर उभरा। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद स्वदेशी भाषा का मान-सम्मान पुनः लौटा। 14 सितंबर 1949 को भारत सरकार ने हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाया। और राजकाज की भाषा के तौर पर इसे राजभाषा के रूप में अपनाया। भारत विविध धर्मों, रीति-रीवाज़ों और संस्कृतियों का देश है । इतनी सारी क्षेत्रीय भाषाओं के होते हुए हिंदी भाषा को सर्वजन की भाषा बनाना, इसका पूरे भारत में प्रचार-प्रसार करना, अस्तित्व कायम करना, किसी चुनौती से कम नही है, उस पर सैकड़ों वर्षों तक छाई रही अंग्रेजी भाषा भी हिंदी से लिए एक कठिन चुनौती बनती रही है। कलाकारों, कवि-लेखकों व गायकों का हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में विशेष योगदान रहा है।

भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा सरकारी कार्यालयों मेंराष्ट्रीय स्तर पर विशेष नीतियों व लक्ष्यों के माध्यम से हिंदी के विकास और प्रचार-प्रसार को अनिवार्य रूप से बढ़ाने की ओर अथक प्रयास किए जाते रहे हैं, जिसके अंतर्गतहिंदी प्रशिक्षण कार्यक्रम, प्रोत्साहन योजानाएं तथा विशेष सुविधाएं व पर्याप्त अनुदान दिया जाना सम्मिलित है। समय-समय पर इस दिशा में किए जा रहे प्रयासों की समीक्षा व निरीक्षण भी किए जाते हैं। सरकार की इन नीतियों के कारण हिंदी की प्रगति व प्रचार कार्यान्वयन योजनाएं फलीभूत हो रही हैं।

हिंदी हमारी संपर्क भाषा है और व्याकरण की दृष्टि से तर्कसंगत भाषा भी है। इसका समृद्ध और वैज्ञानिक आधार है। भूमंडलीकरण के इस दौर में क्षेत्रीय भाषाएं सिमट रही हैं और वैश्विक स्तर की भाषाओं का विस्तार हो रहा है। इनमें से हिंदी भाषा भी एक है जिसका प्रचार-प्रसार न केवल राष्ट्रीय स्तर पर अपितु अतंरराष्ट्रीय स्तर पर बढ़ा है। इसका श्रेय

कंप्यूटर, मोबाइल फोन और अन्य गैजेट्स में विकसित की गई नई तकनीकि को जाता है। विशेषकर गूगल ने हिंदी में टंकण व अनुवाद तथा बोलकर हिदीं लिख देने की सुविधा को उपलब्ध कराके हिंदी के प्रचार और उपयोग की अपार संभावनाओं को साकार किया है।इससे हिंदी भाषा को विश्व पटल परलाने की परिकल्पना सफल हुई है। **गूगल इनपुट टूल** की मदद से रोमन लिपि में टंकण करके हिंदी को देवनागरी लिपि में लिखा जा सकता है तथा इसकी मदद से शब्दों के कई विकल्प भी सहज ही मिल जाते है और यह हिंदी टंकण के मानक रूप अर्थात् मंगल फोंट या एरियल यूनिकोड में सरलता से प्राप्त किया जा सकता है जिसे आसानी से ईमेल या व्हॉटसप्प किया जा सकता है। मोबाइल फोन में भी हिंदी टंकण की सुविधा दी गई है। जिससे हिंदी भाषा में संदेशों के आदान-प्रदान की व्यवस्था उपलब्ध हुई है तथा लोगों का रूझान हिंदी की ओर बढ़ा है। गूगल सर्च द्वारा हिंदी शब्द संसाधन की दिशा में भी प्रगति हुई है। इसके माध्यम से हिंदी में तकनीकी, वैज्ञानिकव व्याकरणिक शब्दावली के प्रयोगों की सुविधा मिली है। हिंदी साहित्य की उपलब्धता बढ़ी है तथा इसके यूर्जस् दिन प्रतिदिन बढ़ रहे हैं।

अतः यह हर्ष की बात है कि हिंदी का प्रचार व प्रसार विश्व पटल पर साहित्यिक तथा व्यावसायिक तौर पर बढ़ रहा है। हिंदी के कदम आधुनिकता और तकनीकी की ओर बढ़े हैं। यह हिंदी ही नहीं भारतीयता का प्रसार है। इससे देश-प्रेमी हिंदी प्रेमी प्रसन्न हैं ।

हिंदी भाषा उपवन है, शब्द सुमन, हम सब माली है,
आओ इसेसंचित करें, यह तन-मन में बसने वाली है।

हिंदी जन-जन की भाषा है, येभारत की परिभाषा है,
आओ इसकाविकास करें, यही सबकी अभिलाषा है।

सुशील कुमार,
आशुलिपिक, ग्रेड-2,
डीन कार्यालय, निफ्ट मुख्यालय